3 दिल्ली सल्तनत की स्थापना

(सन् 1206 ई. से 1290 ई.)

KYYTKB

पिछले पाठ में आपने जाना कि सन् 650 ई. से 1200 ई. के बीच भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंटा हुआ था। लेकिन सन् 1200 ई. के बाद उत्तर भारत में दिल्ली के आस–पास तुर्कों का एक शक्तिशाली राज्य बना। इस राज्य के शासकों ने लगभग पूरे भारत पर अपना शासन स्थापित किया। इसे ही हम 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जानते हैं। अरबी भाषा में शासकों को सुल्तान कहा जाता था, इसी कारण उनके राज्य को सल्तनत कहा गया। इसमें पाँच वंश हुए– 1. गुलाम वंश, 2. तुगलक वंश, 3. खिलजी वंश, 4. सैय्यद वंश, 5. लोदी वंश। अब हम इस पाठ में गुलाम वंश के बारे में पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम जानेंगे कि दिल्ली में सुल्तानों का राज्य कैसे बना?

मुहम्मद ग़ोरी

उन दिनों भारत के उत्तर पश्चिम राज्य अफगानिस्तान में, तुर्किस्तान से आए तुर्क सुल्तानों ने अपना राज्य स्थापित कर रखा था। ये सुल्तान अपने राज्यों को बढ़ाने के लिए आपस में लड़ते थे। इन्हीं राज्यों में से एक था 'ग़ोर' जिसका सुल्तान था मुहम्मद ग़ोरी। वह भी कई तुर्की सुल्तानों

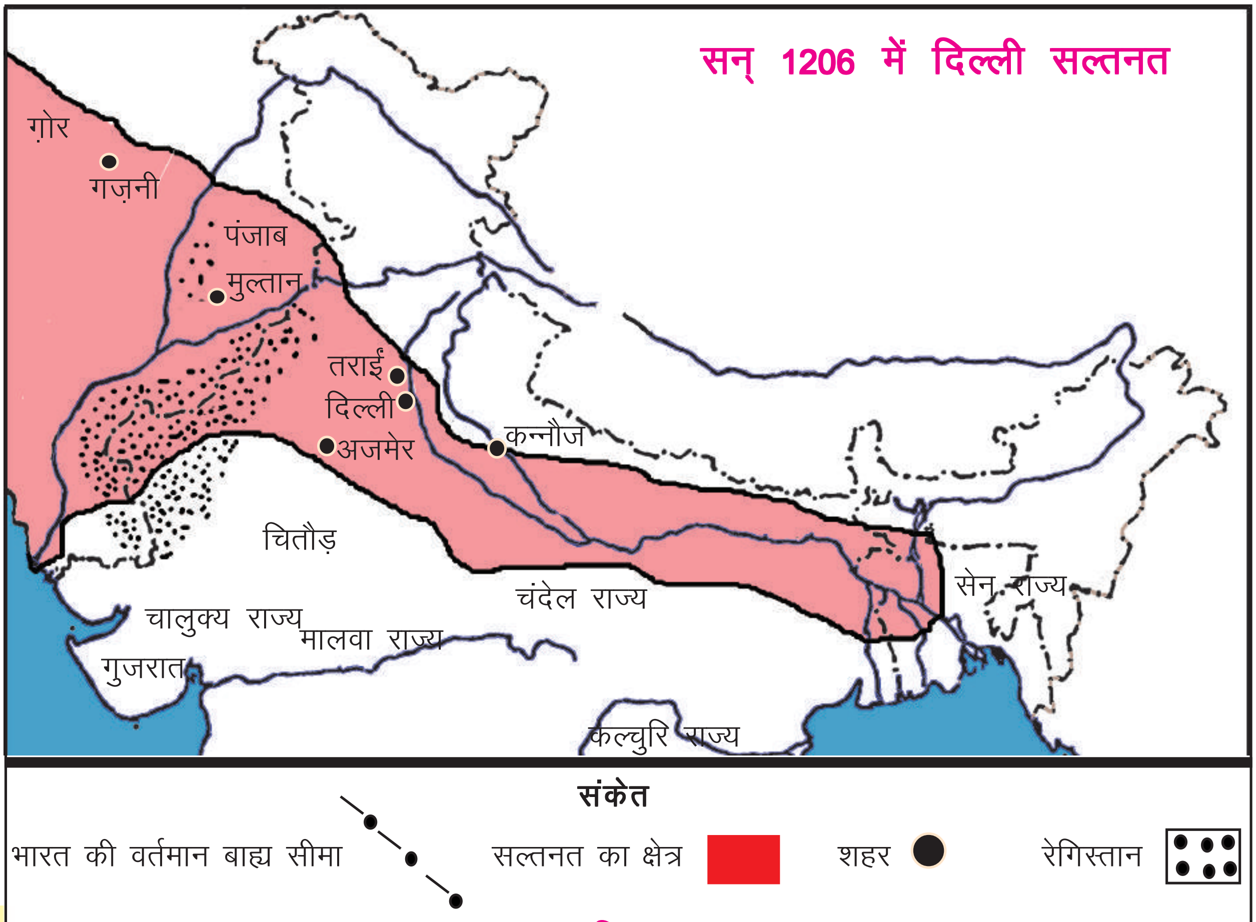

मानचित्र–3.1

से लड़ा लेकिन ख्वारिज्म (पूर्वी ईरान का एक राज्य) के शाह से वह नहीं जीत पाया। इसलिए अपने राज्य को बढ़ाने के लिए उसके पास भारत की ओर बढ़ने के अलावा और कोई उपाय नहीं था।

उसने सबसे पहले पंजाब क्षेत्र के मुल्तान को जीता और फिर गुजरात को जीतने के लिए बढ़ा। उन दिनों समुद्री व्यापार के कारण गुजरात राज्य काफी संपन्न और शक्तिशाली था। लेकिन गुजरात के राजा मूल राज द्वितीय ने उसे सन् 1178 ई. में हरा दिया। गुजरात में हारकर गोरी ने सोचा कि उसे पहले पंजाब पर पूरा अधिकार करना चाहिए। पंजाब के शासक ताकतवर नहीं थे इसलिए धीरे–धीरे गोरी ने पूरे पंजाब पर अपना अधिकार जमा लिया। अब उसके राज्य की सीमा पृथ्वीराज चौहान के राज्य की सीमा तक पहुँच गई। पंजाब को जीतने के बाद गोरी दिल्ली विजय की योजना बनाने लगा।

पृथ्वीराज चौहान तृतीय (रायपिथौरा)

KZ8PLY

उन दिनों दिल्ली और अजमेर पर चौहान वंश के राजपूत राजा पृथ्वीराज तृतीय का शासन था। वे एक शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी राजा थे। मुहम्मद ग़ोरी की तरह पृथ्वीराज भी अपने आसपास के राजाओं से लड़कर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे। अतः उसने भी गुजरात पर हमला किया लेकिन ग़ोरी की तरह पृथ्वीराज भी राजा भीम से हार गये। फिर उन्होंने पूर्व दिशा के राज्यों को जीतना चाहा, मगर असफल रहे। अपने राज्य को बढ़ाने के लिए उनके पास भी एक ही उपाय था कि वह पंजाब की ओर बढ़े। अब मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज के बीच युद्ध होना स्वाभाविक ही था।

1. मानचित्र–3.1 में देखें ये स्थान भारत के किस भाग पर स्थित हैं– ग़ोर, अजमेर, गुजरात, पंजाब, दिल्ली।
2. पृथ्वीराज और ग़ोरी में लड़ाई होना क्यों जरूरी हो गया था?

तराईंन का युद्ध

सन् 1191 ई. में मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच "तराईंन" नाम की जगह पर प्रथम युद्ध हुआ। इसमें ग़ोरी को पृथ्वीराज ने हरा दिया। इस युद्ध में मुहम्मद ग़ोरी बुरी तरह घायल हो गया था और मुश्किल से बचकर निकल पाया। वापस लौटकर ग़ोरी ने एक और युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दी। अगले साल सन् 1192 ई. में "तराईंन" के मैदान में दोनों के बीच दूसरा युद्ध हुआ।

पृथ्वीराज की सेना बहुत बड़ी थी– उसमें पैदल सैनिक, हाथी व घोड़े थे। कई छोटे राजा व सामंत अपनी–अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज की मदद के लिए आए थे। ग़ोरी की सेना बहुत छोटी थी और उसमें हाथी नहीं थे। लेकिन उसके पास तेज दौड़नेवाले घोड़े थे और कुशल घुड़सवार सैनिक थे जो घोड़े पर चलते–चलते तीर चला सकते थे।

जब गोरी के घुड़सवारों ने पृथ्वीराज के हाथियों पर वार किया तो हाथी पीछे की तरफ भागने लगे और अपनी ही सेना में तबाही मचाने लगे। अंत में इस युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई।

तराईंन के दूसरे युद्ध के बाद दिल्ली में राजपूतों की जगह तुर्कों का शासन स्थापित हो गया। इसके बाद मुहम्मद गोरी के तुर्क सेनापतियों ने तेजी से पूरे उत्तर भारत को अपने कब्जे में कर लिया।

तुर्कों की सफलता के कारण

तुर्की लोग इतनी तेजी से कैसे सभी प्रमुख राजपूत राजाओं को हरा पाए? या राजपूत राजा उनसे क्यों हारे? इन सवालों के बारे में इतिहासकार काफी सोच–विचार करते हैं और अलग–अलग इतिहासकारों के अलग–अलग मत भी है।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजपूत राजाओं का पारस्परिक मतभेद भी एक प्रमुख कारण था। इनमें राजा जयचन्द की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

कुछ और इतिहासकारों का मानना है कि तुर्क जीते क्योंकि उनके पास फुर्तीले, तीर चलाने वाले घुड़सवार थे। वे युद्धभूमि में तेजी से दुश्मनों पर टूट पड़ते थे और अपना बचाव भी कर लेते थे अर्थात् उनके युद्ध करने के तरीके और साधन राजपूतों से बेहतर थे।

1. ऊपर बताए दोनों कारणों में से कौन सा कारण आपको सबसे ज्यादा ठीक लगता है?
2. इसके अलावा और कौन–कौन–से कारण हो सकते हैं ?

गुलाम से सुल्तान

तराईंन युद्ध के कुछ ही साल बाद गोरी की हत्या कर दी गई। उस समय दिल्ली में उसके गुलाम अधिकारी व सेनापति थे जो वहाँ की शासन व्यवस्था देख रहे थे।

क्या आप जानते हैं गुलाम कौन होता है और गुलामी क्या होती है? कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा करें।

क्या आप सोच सकते हैं कि इन दिनों गुलाम बड़े अधिकारी व सेनापति भी होते थे ? उन दिनों तुर्किस्तान, ईरान आदि देशों में यह एक आम बात थी। कुछ व्यापारी युवकों को खरीदकर उन्हें युद्ध कला और प्रशासन का प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेच देते थे। इन गुलामों को उनकी योग्यता के अनुसार काम और पद दिए जाते थे। इसके बदले उन्हें अधिक वेतन भी दिया जाता था। कुछ योग्य गुलाम अधिकारी अपने मालिक के बाद शासक भी बने। दिल्ली में मुहम्मद गोरी का गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक प्रशासन का काम देख रहा था। गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ने अपने आपको एक स्वतंत्र सुल्तान और दिल्ली को एक स्वतंत्र प्रांत घोषित कर दिया। इस तरह वह दिल्ली का पहला सुल्तान बना। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण प्रारंभ कराया था।

कुतुबुद्दीन के बाद उसका गुलाम और दामाद इल्तुतमिश सुल्तान बना। उसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य पूर्ण कराया। इल्तुतमिश के सामने दो बड़ी समस्याएँ थीं– पहली, अपने ही अधिकारियों का व्यवहार और दूसरी पराजित राजपूत राजपरिवारों का व्यवहार। सल्तनत के बड़े अधिकारी व सेनापति सुल्तान से दबकर नहीं रहना चाहते थे और मनमानी करना चाहते थे। इस कारण सुल्तान अपने प्रशासन को मजबूत नहीं कर पा रहा था। इसका फायदा उठाकर पुराने राजाओं के वंश के लोग सल्तनत का विरोध करने लगे। वे गाँव के किसानों से लगान इकट्ठा करके स्वयं रख लेते थे। किन्तु राजकोष में जमा नहीं करते थे। वे सड़कों पर आने–जाने वाले यात्रियों व व्यापारियों को लूट लेते थे। इस प्रकार सल्तनत कमजोर होने लगी थी। सुल्तानों के आदेशों का पालन केवल कुछ शहरों में ही होता था।

इल्तुतमिश ने प्रशासन को ठीक करने के लिए चालीस योग्य गुलामों को ऊँचे पद दिए। वे सब सुल्तान के प्रति वफादार रहकर उसकी सेवा करते रहे। उनमें से कई को **इक्तादार** बनाया गया था। इक्तादारों का काम था अलग–अलग प्रांतों में रहकर वहाँ का प्रशासन संभालना, विद्रोहों को दबाना और गाँवों से लगान वसूलना। इस तरह जो लगान इकट्ठा होता था, उसे वे अपने वेतन और प्रशासन के खर्च के लिए रख लेते थे। इन इक्तादारों का समय–समय पर एक प्रांत से दूसरे प्रांत में तबादला होता रहता था। पिता के बाद पुत्र को उसका इक्ता या पद विरासत में नहीं मिलता था।

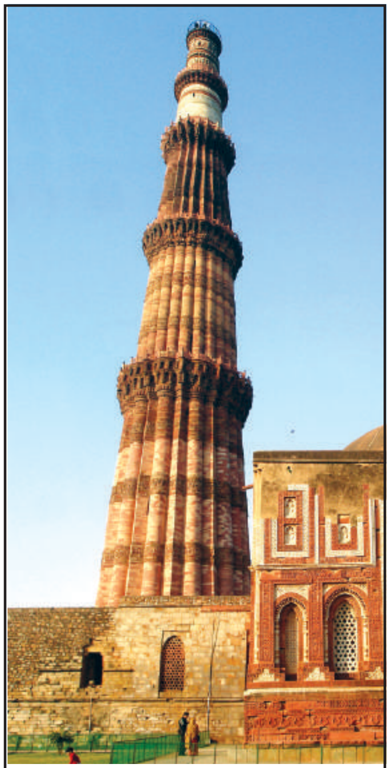
चित्र–3.1 कुतुबमीनार दिल्ली

1. गुलामों को ऊंचे पद देने से सुल्तान को क्या फायदा हो सकता था और क्या नुकसान ?
2. राजपूत राजा किस प्रकार सल्तनत का विरोध कर रहे थे?

रज़िया सुल्तान

इल्तुतमिश के बाद उसकी बेटी रजिया दिल्ली की गद्दी पर बैठी। वह दिल्ली की गद्दी पर बैठनेवाली एकमात्र महिला शासक थी। गद्दी पर बैठने के बाद वह पुरुषों के समान चोंगा और टोपी पहनती थी। वह घोड़े की सवारी करती थी और किसी योग्य राजा की भाँति राज्य का काम–काज सँभालती थी।

रज़िया ने अपने पूरे राज्य में शांति व्यवस्था कायम की। परंतु तुर्क सरदार अपनी बात माननेवाले को गद्दी पर बैठाना चाहते थे, जिसे वे अपने इशारों पर नचा सकते हों। उन्हें जल्दी ही पता चल गया कि रज़िया भले ही स्त्री है लेकिन वह उनकी कठपुतली बनने को तैयार नहीं है। अपने गुणों के बावजूद रज़िया कुछ खास नहीं कर पाई, क्योंकि जब उसने अपने प्रति वफादार सरदारों का एक दल तैयार किया और गैर तुर्कों को बड़े पद देना शुरू किया तो तुर्क सरदारों ने उसका विरोध प्रारंभ कर दिया और उसकी हत्या कर दी।

बल्बन

रजिया के बाद दिल्ली का महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन था। वह इल्तुतमिश द्वारा स्थापित 40 गुलामों के दल का एक सदस्य था। तुर्क सरदार (अमीर) इस समय बड़े शक्तिशाली हो गए थे और वे सुल्तान के सम्मान का भी ध्यान नहीं रखते थे। वे सुल्तान के विरुद्ध षडयंत्र रचा करते थे और सुल्तान को धमकी देते रहते थे। बल्बन के सामने इन सरदारों को दबाना सबसे गंभीर समस्या थी। धीरे–धीरे किंतु दृढ़ता से बल्वन ने उनकी शक्ति को नष्ट कर दिया और सरदारों को राजभक्त बनाने में सफलता प्राप्त की। बल्बन सुल्तान की निरंकुश शक्ति पर विश्वास करते थे। उसने अपनी स्थिति इतनी मजबूत कर ली कि सुल्तान की शक्ति को कोई चुनौती नही दे पाया। वह कहता था कि राजा ''ईश्वर की परछाई'' और धरती पर उसका प्रतिनिधि है। उसने लोगों को सुल्तान के सामने सिजदा (सिर झुकाना) और पायबोस (राजा के पैर चूमना) करना अनिवार्य कर दिया। तुर्क सरदार बल्बन की ताकत और कठोरता से

इतने भयभीत थे कि उन्हें उसका आदेश मानना पड़ा। बल्बन की मृत्यु के बाद कैकुबाद शासक बना परन्तु तीन वर्षों के बाद ही उसके वंश का अंत हो गया।

दिल्ली के प्रारंभिक तुर्क सुल्तानों ने एक नई शासन व्यवस्था की स्थापना की। उनके शासन काल में मध्य एशिया के शक्तिशाली शासक चंगेज खाँ एवं अन्य मंगोलों का आक्रमण हुआ। जिसका उन्होंने सफलतापूर्वक मुकाबला किया तथा दिल्ली के शासन को मजबूत किया। उस समय सम्पूर्ण मध्य एवं पश्चिम एशिया में मंगोलों का आक्रमण हो रहा था परंतु मंगोल दिल्ली के सुल्तानों को पराजित नहीं कर पाए और इस काल में भारत मंगोल आक्रमण से बच गया।

भारत में तुर्क राज्य स्थापित होने से ईरान, ईराक, तुर्किस्तान, खुरासान आदि देशों से लोग यहाँ आकर बसने लगे। सुल्तानों के समय इतिहास की कई पुस्तकें लिखी गई थीं जिनमें हर शासक के समय में क्या–क्या बातें घटित हुई, उनके विवरण हमें मिलते हैं। ये तुर्क अपने साथ अपने रीति–रिवाज व धर्म तो लाए ही साथ ही अपने हुनर, पहनावा और पकवान आदि भी लेकर आए थे। इनके बारे में हम आगे के पाठ में पढ़ेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. खण्ड ''क'' में दिए गए शासकों के नाम के सामने खण्ड ''ख'' में उनसे संबंधित स्थानों के नाम लिखिए –

KZHKNL

स. क्र.	खण्ड ''क''	खण्ड ''ख''
01.	पृथ्वीराज चौहान	....
02.	मुहम्मद ग़ोरी	....
03.	कुतुबुद्दीन ऐबक	....
04.	राजा भीम	....
05	चंगेज खाँ	....

2. नीचे दिए सुल्तानों के नाम, उनके शासन काल क्रमानुसार लिखकर उनके बारे में संक्षेप में लिखें –

मुहम्मद ग़ोरी, कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रज़िया, बल्बन, कैकुबाद।

3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें–

(अ) इक्तादार (ब) गुलाम (स) सरदार

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 50 से 100 शब्दों में दीजिए –

1. पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद ग़ोरी के बीच हुए युद्ध का वर्णन कीजिए ?
2. तुर्की सेना और राजपूतों की सेना में क्या–क्या अन्तर था ?
3. तुर्क सुल्तानों के सामने क्या–क्या प्रमुख समस्याएँ थीं ?
4. तुर्क सरदार रज़िया को क्यों हटाना चाहते थे ?

योग्यता विस्तार–

मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान दोनों ही गुजरात को क्यों जीतना चाहते थे, कोई दो कारण ढूँढ़कर अपनी कॉपी में लिखें।